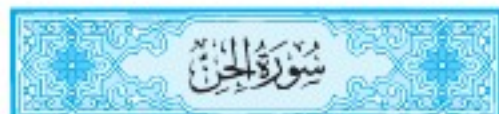


सूरह जिन्न - 72



सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुर्आन सुना और उस के सच्च होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुशरिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर वही
(प्रकाशना^[1]) की गई है कि ध्यान से
सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा
कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا
سَمِعْنَا مَوْزَنًا مَّجِيدًا

2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम
ईमान लाये उस पर। और हम कदापि
साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार
के साथ किसी को।

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرَكَ بِرَبِّنَا
أَحَدًا

3. तथा निःसंदेह महान् है हमारे पालनहार
की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई
संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَلَا وَلَدًا

1 सूरह अहकाफ आयत: 29, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो आप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वही (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।
5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।
6. और वास्तविकता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिन्नों में से कुछ लोगों की तो उन्होंने ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।
7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।
8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।
9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।
10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?
11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

وَأَنَّهُ كَانَ يَفُولُ سَفِيهًا عَلَى اللَّهِ سَطَطًا ۝

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلْأَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَسْمَعُ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شُهَابًا رَصَدًا ۝

وَأَنَّا لَآئِنْدَرِي أَشَرُّ أَرِيدٍ يَمُنُّ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا طَرَائِقَ قِدْدًا ۝

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।
13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर ईमान ला आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।
14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।
15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।
16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।
17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।
18. और यह कि मस्जिदें^[1] अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।
19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نَعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نَعْجِزَهُ هَرَبًا ۝

وَأَنَّا لِنَسْمِعَنَّ الْهُدَىٰ مَنَّا ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَحَافُ بَحْسًا وَلَا رَهَقًا ۝

وَأَنَّا مِمَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِمَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَن لَّمْ يَأْمُرْكَ بِشَيْءٍ مِّنَ الْيُسْرِ وَلَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً غَدَقًا ۝

لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝

وَأَنَّهُ لَنَتَّاقَمَعْبُدُ اللَّهَ يَدْعُوهُ كَادُوا

1 मस्जिद का अर्थ सज्दा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۖ

भक्त^[1] उसे पुकारता हुआ तो समीप
था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने
पालनहार को पुकारता हूँ और साझी
नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۖ

21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं
रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न
सीधी राह पर लगा देने का।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۖ

22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं
बचा सकेगा अल्लाह से कोई^[2] और
न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई
शरणागार (बचने का स्थान)।

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيبَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ
مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۖ

23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का
आदेश तथा उस का उपदेश। और
जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के
रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये
नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य
सदावासी होगा।

إِلَّا بَلَعًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسْلَةً وَمَنْ يَعْصِ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ قَانَ لَهُ تَارَاجُهُمْ خُلْدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۖ

24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का
उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें
विश्वास हो जायेगा कि किस के
सहायक निर्बल और किस की संख्या
कम है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْعَلُونَ مَنْ
أُضْعِفَ نَاصِرًا وَأَقْلَّ عَدَدًا ۖ

25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि
समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مِمَّا تُوعَدُونَ
أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۖ

1 अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा
भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुर्आन तथा इस्लाम की राह से
रोकना चाहते हैं।

2 अर्थात् यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वही के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।^[1]

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।^[2] और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

عَلِمَ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ۝

إِلَّا مَنِ امْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَمْلِكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
رِصْدًا ۝

لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولًا رَّبَّهُمْ وَأَحَاطَ
بِمَالَدَيْهِمْ وَأَخْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

1 अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वही अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे ग़ैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद को आधात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

2 अर्थात् वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिकता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।